International Journal of Geography, Geology and Environment

P-ISSN: 2706-7483
E-ISSN: 2706-7491
IJGGE 2023; 5(1): 54-56
Received: 06-01-2023
Accepted: 16-02-2023

मीना ठाकरे
सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग, शासकीय महाविद्यालय, बिछुआ, छिन्दवाड़ा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
मीना ठाकरे
सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग, शासकीय महाविद्यालय, बिछुआ, छिन्दवाड़ा, मध्य प्रदेश, भारत

कृषि विकास की समस्यायें एवं संभावनाएँः जनपद छिंदवाड़ा (म.प्र.) का एक भौगोलिक अध्ययन

मीना ठाकरे

DOI: https://doi.org/10.22271/27067483.2023.v5.i1a.141

सारांश
अध्ययन क्षेत्र जनपद छिंदवाड़ा में भूमि ही सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है, जिसका दोहन विभिन्न सामाजिक–आर्थिक क्रियाओं में हजारों वर्षों से किया जाता रहा है। यहाँ सम्पूर्ण आर्थिक तंत्र के केन्द्र में भूमि आधारित कृषि है, जिससे किसान इस प्रकार आबद्ध है कि उससे हटकर उसका कल्याण सम्भव नहीं है। फलस्वरूप समुचित कृषि सुधार के द्वारा ही ऐसी परिस्थितियाँ पैदा की जा सकती हैं, जिससे क्षेत्र का विपन्न किसान अपनी आर्थिक एवं सामाजिक दशा में सुधार कर सकता है। इस नगर का नामकरण 'छिंद', यानी खजूर जैसे दिखने वाले वृक्ष के नाम पर हुआ है। इस क्षेत्र में ऐसी भू वैन्यासिक संगठन और समन्वित विकास योजना की आवश्यकता है, जिससे क्षेत्र में रोजगार प्राप्ति की सुविधा और आय में वृद्धि की सम्भावना हो। इसके लिए जहाँ एक ओर प्राकृतिक विपदाओं पर नियंत्रण आवश्यक है, तो दूसरी ओर कृषि अर्थव्यवस्था में नवीन तकनीकों एवं वैज्ञानिक प्राविधियों के प्रयोग से उत्पादन में अभिवृद्धि, कृषि का व्यापक व्यापारीकरण तथा उसमें विविधता उत्पन्न करने की आवश्यकता है, जिससे क्षेत्र के निवासियों को स्वास्थ्यप्रद भोज्य पदार्थ एवं जीवन की अन्य सुविधायें प्रदान की जा सके। इससे जहाँ एक ओर भूमि के दुरूपयोग में कमी होगी, तो दूसरी ओर उसमें क्षेत्र की बढ़ती जनसंख्या के अधिभार को सहन करने की क्षमता में वृद्धि होगी, जिससे जनपद आत्मनिर्भर होकर कालान्तर में अन्य क्षेत्रों को अपने उत्पादनों का लाभ दे सकेगा।

कूटशब्दः कृषि, प्राकृतिक संसाधन, फसल संयोजन, भूमि।

प्रस्तावना
छिंदवाड़ा भारत के मध्य प्रदेश प्रान्त में स्थित एक प्रमुख शहर है। छिंदवाड़ा नगर, दक्षिण–मध्य मध्य प्रदेश राज्य, मध्य भारत, कुलबेहरा की धारा बोदरी नदी के तट पर स्थित है। यह 'पहाड़ों की सतपुरा रेंज' के दक्षिण–पश्चिमी क्षेत्र में स्थित है। यह 21.28 से 22.4 9 डिग्री तक फैल गया है। उत्तर (रेखांश) और 78.40 से 79.24 डिग्री पूर्व (अक्षांश) और 11,815 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। यह 671 मीटर की ऊँचाई पर सतपुड़ा के खुले पठार पर स्थित है और उपजाऊ कृषि भूमि से घिरा है, जिसमें बीच–बीच में आम के बाग हैं और इसके पश्चिमोत्तर में कम ऊँचाई वाले ऊबड़ खाबड़ पहाड़ तथा दक्षिण में नागपुर के मैदानों की ओर ढलान है। पठार के दक्षिणी और पूर्वी हिस्से में चौराई गेहुं के उपजाऊ मैदान हैं। नागपुर का मैदान कपास और ज्वार की खेती का समृद्ध इलाका है और इस समूचे क्षेत्र का सबसे संपन्न और सर्वाधिक आबादी वाला हिस्सा है। वैनगंगा, पेंच और कन्हन नदियाँ इस क्षेत्र को अपवाहित करती हैं। यहाँ की मिट्टी बजरीयुक्त और जल्दी सूखने वाली है। अपेक्षाकृत कम बारिश के बावजूद यहाँ का मौसम विशेष रूप से स्वास्थ्यवर्द्धक और खुशनुमा है। इस नगर का नामकरण 'छिंद', यानी खजूर जैसे दिखने वाले वृक्ष के नाम पर हुआ है। यहाँ के किसान मक्के की अनेक किस्मों का उत्पादन करते है साथ ही प्रति हेक्टैयर उत्पादन अधिक होने के कारन यहाँ के किसान मक्के की खेती करते है। जिले का ज्यादा औधोगिकरण नहीं हो पाया है जिसके वजह से यहाँ की लगभग 80% से अधिक जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। यहाँ के किसान अनेक प्रकार की सब्जिया (विशेष रूप से आलू) उगते है साथ ही ऐसे नागपुर, भोपाल, जलबलपुर बेचने के लिए लेकर जाते है। जिला छिंदवाड़ा को 14 तहसील (छिंदवाड़ा, छिंदवाड़ानगर, तामिया, परासिया, जुन्नारदेव, अमरवाड़ा, चौरई, सौसर, पंदुरना, बिछुआ, उमरेठ, मोहखेड़, चॉद और हर्रई) में विभाजित किया गया है। 11 विकास ब्लॉक (छिंदवाड़ा, परासिया, जुन्नारदेव, तामिया, अमरवाड़ा, चौरइ, बिछुआ, हर्रई, मोहखेड़, सौसर और पंदुरना)। यहॉ की छिछ्ली काली मिट्टी(7%) सतपुड़ा, मैकाल, बैतूल छिंदवाड़ा सिवनी क्षेत्र में पाई जाती है काली मिट्टी को रेगुर मिट्टी भी कहा जाता है। मध्य प्रदेश के सर्वाधिक भाग पर काली पाई जाती हैं।

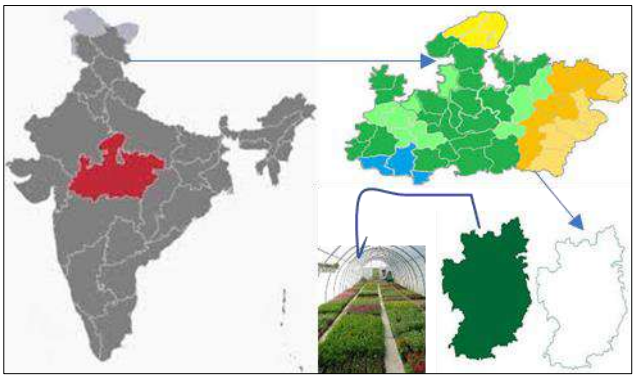

शोध की प्रविधिः– प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीय तथा तृतीयक स्रोत से प्राप्त आँकड़ों का प्रयोग एवं सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक तथ्यों को स्पष्ट करने के लिए क्षेत्र में भौतिक तथा सांस्कृतिक मानचित्रों व तालिकाओं का प्रयोग यथास्थान पर हुआ है। प्रस्तुत शोध पत्र व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान पर आधारित है।

जनपद छिंदवाड़ा में शोध का उद्देश्य

जिले की भौगोलिक स्थिति के अनुसार कृषि विकास की समस्या का पता लगाना।
अलग–अलग विकासखण्ड में फसल विविधीकरण।
प्राकृतिक खेती, और मिश्रित खेती का अवलोकन कर किसानों को आवश्यक जानकारी देना।
मिट्टी की गुणवत्ता का परीक्षण कर फसल गहनता का पता लगाना।
मानसून के अनुसार फसल के निर्धारण पर ध्यान देना।

जनपद छिंदवाड़ा में कृषि विकास की समस्यायें

छोटी और बिखरी हुई भूमि– आज कृषि की सबसे बड़ी समस्या यही है किसानों के सबसे बड़े हिस्से के पास सबसे कम जमीन है। छिंदवाड़ा में लघु व सीमांत किसान 86% है लेकिन उनके अधिकार में 50% से भी कम भूमि है। भूमि के असमान वितरण और छोटे किसानों की अधिक संख्या एक ऐसी समस्या है जिसका जवाब ढूंढना बहुत कठिन है।

सिंचाई के लिए पानी की कमी– भारत में जिस तरह की फसलें बोई जाती है उनके के लिए पानी बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन खरीफ में अनियमित बारिश की समस्या हो या रबी फसलों के लिए पानी की कमी की समस्या हो किसानों को हर वक्त पानी परेशान करता रहता है। आज के दौर में जहां जलवायु परिवर्तन का खतरा मंडरा रहा है, भू जल स्तर लगातार गिरता जा रहा है ये समस्या भयानक होने की तरफ बढ़ रही है।

कृषि के प्रति नई पीढ़ी में रुचि का अभाव– किसान पर किए कई सर्वे में यह सामने आया है कि 50% किसान अपने बच्चों को किसानी नहीं करवाना चाहते, साथ ही नई पीढ़ी भी किसानी नहीं करना चाहती। हालाकि आज भी कृषि से देश का 49% रोजगार उपलब्ध होता है पर आने वाले समय में यह बड़ी समस्या हो सकती है।

मृदा अपरदन– उपजाऊ भूमि के बड़े भाग हवा और पानी द्वारा मिट्टी के क्षरण से पीड़ित हैं। इस क्षेत्र को ठीक से इलाज किया जाना चाहिए और इसकी मूल प्रजनन क्षमता को बहाल करना चाहिए।

सरकारी योजनाओं का असफल क्रियान्वयन– सरकारें कई योजनाएं बनाती हैं पर उनका पूरा लाभ किसानों तक नहीं पहुंच पाता। पहले तो किसानों में योजनाओं के प्रति जागरूकता की कमी है अगर जागरूकता हो भी तो सरकारी अफसरों के भ्रष्टाचार और कागजी झंझटो का सामना करना गंभीर समस्या है।

उचित मूल्य का ना मिलनाः– किसानों की सबसे बड़ी समस्या उनके कृषि उत्पादों की कम कीमत है। हाल के एक अध्ययन से पता चला है कि उत्पादन की ऊर्जा पर आधारित उचित मूल्य निर्धारण और कृषि मजदूरी को औद्योगिक मजदूरी के बराबर करना किसानों के लिए फायदेमंद हो सकता है।

कृषि क्षेत्र में इंफ्रास्ट्रक्चर की कमीः– किसानों के सामने सबसे बड़ी समस्याओं में से एक बुनियादी ढांचे की कमी है। इसमें खराब सड़कें, परिवहन सुविधाएं आदि शामिल हैं। किसानों को परिवहन सेवाओं के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है जिससे उनकी लागत काफी बढ़ जाती है।

कृषि विपणन की समस्याः– भारत में कृषि विपणन की समस्याओं में बहुत अधिक मध्यवर्ती, दोषपूर्ण वजन और पैमाने, निरक्षरता और एकता की कमी, भंडारण की कमी, परिवहन सुविधाओं की कमी, वित्तीय संसाधनों की कमी, संगठित विपणन प्रणाली की कमी, मानकीकरण की कमी, बाजार के बारे में जागरूकता की कमी शामिल है।

जनपद छिंदवाड़ा में कृषि विकास हेतु समाधान

- किसान एक साथ मिलकर सामूहिक रूप से बड़ी भूमि पर वैज्ञानिक तरह से खेती करें।
- ऐसे बीजों का उपयोग, जिनमें पानी की कम जरूरत पड़े, सिंचाई के उन्नत तकनीक और जल संरक्षण के प्रति जागरूकता बनी रहे।
- कृषि का मशीनीकरण।
- पढ़ी–लिखी नई पीढ़ी की जैविक खेती में रुचि और उनके वैज्ञानिक तरह से कृषि का लाभ उठाने वाले मानसिक दृष्टिकोण।
- पेड़ों को लगाना भी एक अच्छा समाधान है।
- जैसे जैसे किसान शिक्षित होते जाएंगे और सरकारी संस्थाओं का डिजिटलाइजेशन होगा, कृषि की समस्या का समाधान भी हो जाएगा।

जिले की केस स्टडी

- जिले में करेले की शंकर बीज की बुवाई करने के लिए बलुई दोमट या दोमट मिट्टी होनी चाहिए। खेत समतल तथा उसमें जल निकास व्यवस्था के साथ सिंचाई की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। करेले को गर्मी और वर्षा दोनों मौसम में उगाया जा सकता है। फसल में अच्छी बढ़वार, फूल व

फलन के लिए 25 से 35 डिग्री सें ग्रेड का ताप अच्छा होता है। बीजों के जमाव के लिए 22 से 25 डिग्री सें.ग्रेड का ताप अच्छा होता है।

- मक्के की खेती में नई तकनीक का प्रयोग कर देश भर के किसानों के लिए इंटर क्रॉपिंग की दिशा में नई दिशा दिखाई है। मक्का की खेती के बीच बंधगोभी की उम्दा पैदावार कर कृषि विशेषज्ञों एवं क्षेत्र के सैकड़ों किसानों को अचंभित कर दिया है।
- जुताई के कुछ सिद्धांत हैं जिनका उपरिलिखित नियमों की अपेक्षा प्रत्येक दशा में पालन करना कृषक का कर्तव्य है।

निष्कर्ष

छिंदवाड़ा में औद्योगिक विकास के लिए कृषि का बहुत अधिक महत्व है, क्योंकि हमारे कुछ उद्योगों को कच्चा माल कृषि से ही प्राप्त होता है। इन उद्योगों में सूती वस्त्र, चीनी, वनस्पति तथा बागान उद्योग तथा कपास उद्योग प्रमुख है। औद्योगिक क्षेत्र में लगे हुए लोगों को खाद्यान्न भी कृषि क्षेत्र से ही प्राप्त होता है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1 कुमार, सुशील 2009, ग्रामीण विकास एवं क्षेत्रीय नियोजन, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पेज नं. 182–195
2 तिवारी, आर.सी. और सिंह, बी.एन. 2014, कृषि भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेशन, प्रयागराज, पेज नं. 80–95
3 तिवारी, आर.सी. एवं सिंह, बी.एन. 2018, कृषि भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेषन, प्रयागराज, पेज नं. 60–82
4 माथुर, बी.एल. 2017, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पेज नं. 205–213
5 https://www.bspublications.com/books/1646455622-paryavaran-sanrakshan-evam-sansadhan-prabandhan-volume-1
6 https://www.geojournal.net/uploads/archives/4-1-3-384.pdf
7 https://www.geojournal.net/uploads/archives/3-1-3-478.pdf
8 http://www.ijcspub.org/papers/IJCSP21D1016.pdf
9 http://www.ijcrt.org/papers/IJCRT2107067.pdf
10 https://ijarsct.co.in/jan1.html
11 मौर्य, एस.डी. 2012. मानव एवं आर्थिक भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज, पेज नं. 256–280
12 सिंह, बैजनाथ 2011, सामुदायिक ग्रामीण विकास, अर्जुन पब्लिशिंग नई दिल्ली, पेज नं. 89–103
13 जिला खादी एवं ग्रामोद्योग कार्यालय, छिंदवाड़ा
14 जिला सांख्यिकीय पत्रिका जनपद, छिंदवाड़ा
15 District Census hand Book Chhindwara, (2018)
16 डॉ. प्रमिला कुमार, डॉ. श्रीकमल शर्मा, ''मध्यप्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन'', मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल 2010।
17 बंसल एस.सी. "भारत का भूगोल" मिनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।
18 चौहान "भारत का भूगोल" रस्तोगी प्रकाशन, मेरठ।
19 डॉ. अल्का गौतम "भारत का वृहद भूगोल" शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद 2009।
20 प्रो. आर. सी. तिवारी "भारत का भूगोल" प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
21 माधुर एवं नारायण "संसाधन भूगोल" वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर।
22 डॉ. चतुर्भुज मामोरिया, डॉ. बी.एल.शर्मा "संसाधन एवं पर्यावरण" साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।
23 अरविन्द कुमार, ''भारत का भूगोल'' पेरियार प्रकाशन, पटना।
24 डॉ. अल्का गौतम, ''संसाधन एवं पर्यावरण'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद 2007।
25 आर्थिक सर्वेक्षण 2020–21, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार।
26 हुसैन माजिद, ''भारत का भूगोल'' टाटा मैक्ग्राहिल्स।
27 झामोरिया, डॉ. चतुर्भुज, ''भारत का भूगोल'' साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
28 खुल्लर डी.आर., ''भूगोल'' टाटा मैक्ग्राहिल्स।
29 कौशिक एस.डी. ''संसाधन भूगोल'' प्रवालिका पब्लिकेशन इलाहाबाद।
30 सिसौदिया डॉ. एम.एस. ''संसाधन भूगोल'' कैलाश पुस्तक सदन भोपाल।
31 हुसैन माजिद, ''भारत और विश्व का भूगोल'' टाटा मैक्ग्राहिल्स।